श्री हनुमान पूजा, 1989 : सारांश

इंगलेन्ड के दक्षिण पूर्वी समुद्र तट पर, क्लिफ्टन नामक शहर में, अप्रैल 23 को श्री हनुमान पूजा की गई। सहज योगियों से बात करते हुए, श्री माताजी ने समझाया कि श्री हनुमान एक देवदूत थे और हम लोग सब मनुष्य से देवदूत बन गए हैं। बाँई ओर गणों का स्थान है और दाहिनी ओर देवदूतों का। संस्कृत में देवदूत का अर्थ है "भगवान के दूत" और सहज योगी इस पृथ्वी पर यही कार्य कर रहे हैं।

देवदूतों की एक विशेषता है कि वे सत्य का साथ किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ते हैं। वे झूठ और दिखावे से सदैव परे रहते हैं, और इस बात की चिन्ता नहीं करते हैं कि दूसरे उनके विषय में क्या सोचते हैं। सत्य ही उनका जीवन है और ये सत्य की स्थापना और सत्य का जीवन व्यतीत करने वालों की रक्षा के लिये किसी भी हद तक जा सकते हैं। अगर सहज योगी सत्य के पथ पर तत्पर रहें, तो ईश्वर की विशेष कृपा उन पर होती है, और उनकी पूर्ण सुरक्षा का भार भी ईश्वर उठाते हैं।

हम अपने स्थान से अनभिज्ञ हैं। श्री माताजी ने इस बात पर ज़ोर देकर कहा, कि उन्होंने हमें देवदूत बनाया है, और अगर हम इस बात को जान लें, तो हमारे सर्वस्व गुण चमक कर हमारे सम्मुख आ जाएँगे। उन्होंने हमें महात्मा नहीं परन्तु देवदूत बनाया है। श्री माताजी सन्त महात्माओं का निर्माण नहीं करतीं। सन्त महात्मा अपने ही प्रयासों से बन जाते हैं। गणेश, कार्तिकेय एवम् हनुमान जैसे देवदूतों का बगैर परिश्रम के निर्माण किया जा सकता है, और सहज योगी भी इसी प्रकार बनते हैं।

महात्माओं में और देवदूतों में एक मौलिक असमानता होती है। सन्त महात्माओं को परेशान किया जा सकता है, तंग किया जा सकता है और उन्हें अपने स्थान से और अपने सिद्धान्तों से डिगाया भी जा सकता है। दूसरी ओर, देवदूत अपने ऊपर कोई समस्या नहीं लेते, वे केवल समस्याओं को हल करते है। अवतार भी आत्म प्रतारण और यातनाएँ स्वीकार करते हैं, जिससे कि उनके जीवन की घटनाएँ उनके विशेष गुणों को जन समुदाय के सम्मुख प्रस्तुत कर सकें। देवदूत इस बात को अच्छी प्रकार जानते है कि ईश्वर उनकी सुरक्षा करते हैं और उनमें आत्मविश्वास भी बहुत होता है। देवदूत होने के कारण, श्री हनुमान में अधिक क्षमताएँ और शक्तियाँ विद्यमान हैं, और उनका प्रयोग करना उनका अधिकार है। मनुष्य को ये याद दिलाने के लिये कि ईश्वर है, और वह अत्यन्त ही सुन्दर और बलवान है, देवदूत अनेक ऐसी घटनाएँ मनुष्य के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं, जिससे उसको यह विश्वास हो सके कि ईश्वर सर्व विद्यमान और सर्व शक्तिमान है।

श्री माताजी ने समझाया कि इश्वर के क्षेत्र में, सहज योगियों को देवदूतों से भी अधिक यह शक्ति प्रदान की गई है, कि वे औरों की कुन्डलिनी जागृत कर सकते हैं और लोगों को आत्म साक्षात्कार प्रदान कर सकते हैं। देवदूत मनुष्य को नहीं बदल सकते। हमारे पास अद्भुत शक्तियाँ हैं, पर हम उनको प्रकट करने में और उनके विषय में बात करने से भी डरते हैं।

...2

श्री हनुमान इस पृथ्वी पर इसलिए आए थे कि जो निर्णय दूसरे करते हैं और जो आज्ञा चक्र के द्वारा प्रकट होते है, वे उन्हें दूर कर सकें। जब आज्ञा दाँए से बाँई ओर चलता है तो हमारा अहम् प्रकट होता है और इसी अहम् को निकाल फेंकने का प्रयत्न श्री हनुमान ने किया। हमें अपने अहम् का नाश नहीं करना है। हमें सहज योग की उन्नति के लिए उसका प्रयोग करना है। इस प्रकार, अगर हमें यह ज्ञान हो जाए कि हम देवदूत हैं तो हममें अहम् का भाव प्रकट ही नहीं होगा। हमारी सारी शक्तियाँ सहज योग के लिए है, और जिस प्रकार श्री माताजी सहज योग के लिए कार्य करती हैं, उसी प्रकार हमें भी सहज योग की उन्नति के कार्य में तत्पर रहना चाहिए।

सहज योग आदि शक्ति द्वारा नहीं किया जाता। उन्होनें यह शक्तियाँ हर एक को प्रदान की हैं और सहज योग इन्हीं आन्तरिक शक्तियों द्वारा धरती माँ और बीज से उत्पन्न हुआ है और आगे बढ़ रहा है। श्री माताजी ने कहा कि वे यहाँ आदि शक्ति के रूप में नहीं है। वे हमारी माँ है, हमारी पावन और पूजनीय माँ, और पूजनीय माँ के रूप में उन्होंने हमारा पथ प्रदर्शन कर दिया है, पर कार्य हमें स्वयं ही करना होगा। हम परम पूज्य परमात्मा के हथियार हैं और हमें कार्य अवश्य पूर्ण करना पड़ेगा। आदरणीय श्री माताजी ने इस बात पर भी ज़ोर डाला कि अगर हमें कार्य फल देखना है तो हमें तीव्रता से कार्य करना होगा। उन्होंने इस विषय में ये भी कहा कि हम सहज योग की बढ़ोत्तरी के लिए समय का ध्यान नहीं रखते। यह पूजनीय कार्य हमारा है एवम् इस कार्य को और कोई नहीं करेगा। हमें सहज योग अवश्य फैलाना है और उसे उस स्तर तक लाना है जहाँ से सर्वस्व जग उसे देख सके। सहज योगियों को निडरता से अग्रसर होना है और वे ये अकेले कर सकते है या समुदाय में कर सकते हैं। उन्हें यह विश्वास हो जाना चाहिये कि परम चैतन्य उनके प्रयत्नों को सफल करेंगे और विश्व को बदलने के कार्य में भी उनकी सहायता करेंगे।

जय श्री माताजी निर्मला माँ।

सर श्रीवास्तव से साक्षात्कार

12/30/88, अलीबाग-भारत

आजकल की विश्व स्थिति पर बात करना अच्छा है। मैं इन्टरनेशनल मैरिटाईम आर्गनाइजेशन में सेक्रेटरी जनरल के पद पर कार्य करता हूँ। यह आर्गनाइजेशन, युनाइटिड नेशन्स का एक हिस्सा है। युनाइटिड नेशन्स की स्थापना जग में शान्ति फैलाने के लिये और मानव के उत्थान के लिए हुई थी। और जब से स्थापना हुई है, तब से यू॰ एन॰ और उसके अन्य भागों ने अनेक कार्य करें हैं। हर क्षेत्र में यू॰ एन॰ ने काम किया है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में डब्ल्यू॰एच॰ओ॰ ने अनेक देशों में कार्य किये हैं। जैसे चेचक को समाप्त करना और मलेरिया एवम् अन्य बीमारियों के विषय

में सोचना। इसी प्रकार, युनेस्को ने भी बहुत काम किया है। यू॰ एन॰ शान्ति लाने के प्रयास में लगा रहता है। हमारी मेरिटाईम आर्गनाईजेशन विश्व के देशों के अच्छे सम्बन्धों पर मेरिटाइम क्षेत्र में कार्य करती है।

पर मेरा विचार है कि केवल लड़ाई रोकने का अर्थ शान्ति नहीं है। लड़ाई रोकना आवश्यक है। हमें खुश होना चाहिये कि गल्फ क्षेत्र में लड़ाई रुक गई है और दोनों देशों में आपस में बातचीत आरम्भ हो गई है। नामीबिया स्वतंत्र हो गया है और अफगानिस्तान ने भी अपनी मर्ज़ी से अपनी सेनाएँ हटा ली हैं।

ये सब बहुत अच्छे विकास हैं पर शायद क्योंकि मैं भारतीय हूँ, मुझे लगता है कि हमें अभी और गहराई में जाना है। हमें मानव और मानवता के विषय में सोचना है। विज्ञान में खूब उन्नति हुई है। औद्योगिक क्रान्ति के बाद संसार में कई क्रान्तियाँ हुई। आज सम्पर्क की क्रान्ति है। संसार के किसी भी हिस्से से लोग किसी भी समय एकदूसरे से बातचीत कर सकते हैं और किसी भी समय एक दूसरे से मिल सकते हैं। तकनीक में इतना विकास हुआ है और ये कम्प्यूटर का समय है पर फिर भी वो क्या मुल तत्व है जिस पर शान्ति निर्भर है ? शान्ति इन्सान के दिल और दिमाग पर निर्भर है और इस बात पर भी निर्भर है कि हर आदमी इस बात को मान लें कि ये विश्व एक बड़ा परिवार है और हम सब भाई बहन हैं। जब तक हम इस मूल समस्या का हल नहीं ढूँढते तब तक कुछ नहीं कर पाएँगे। हमें इन्सानी दिमाग से और विशेष कर दिल से यह बातें निकाल फेंकनी है कि हमें हिस्से बाँटने हैं, हमें एक दूसरे से लड़ना है और हमें अपनी उन्नति दूसरे को दबा कर करनी है। जब तक हम ये सब नहीं कर पाते, तब तक मैं ये मानता हूँ, कि हम मानव को उस स्तर तक नहीं ला सकते जहाँ हर देश एक दुसरे से शान्ति सहित रह सके। ये समस्या मेरे अन्दर हर समय उभरती है और मेरा विचार है कि पूरे विश्व में मानव की ओर अधिक ध्यान देना आवश्यक है।

हमें एक पल के लिये भी यह नहीं मानना चाहिए कि मानव प्रवृत्ति वैसी ही है जैसी दिखाई देती है। होब्स ने कहा है कि "मानव प्रवृत्ति दुष्ट, क्रूर और लघु है।" पर ये एक सीमित दृष्टिकोण है। कभी कभी मानव ये क्रूरता दिखाता है पर असल में ऐसा होता नहीं है। मानव जब अपनी सीमा पर होता है तो उसकी प्रवृत्ति दैनिक होती है और आन्तरिक होती है। हर मनुष्य के अन्दर ये क्षमता होती है कि वो अपने को सुधार सके और ये वो आध्यात्म से कर सकता है। मैं एक धर्म की बात नहीं कर रहा। मेरे विचार में सब धर्म परमात्मा तक ले जाते है। एक ही परमात्मा है और हम सब उसकी सन्तान हैं। हम सब उसके हिस्से हैं और हम सबको यह अधिकार है कि हम कोई भी हिस्सा चुन लें। बस हमें ये अधिकार नहीं है कि हम एक दूसरे से लड़ें। मुझे ये बात कभी समझ में नहीं आती और बड़ा आश्चर्य भी होता है कि जिस परमात्मा के आगे हम सब झुकते हैं, हम उसी के नाम पर आपस में झगड़ते क्यों हैं ?

यहीं पर मैं मानता हूँ कि सहज योग का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। आखिर सहज योग है क्या ? सहज योग में मुख्य बात ये है कि हर मनुष्य को परमात्मा ने बनाया है और हर मनुष्य में वह शक्ति है, जो अगर जागृत हो जाए तो उससे मनुष्य को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो सकता है। हर मनुष्य उस ऊँचाई तक पहुँच सकता है जो उसका अधिकार है और यही उसकी उन्नति की चाबी है। केवल बातें करने से शान्ति नहीं मिलती। यह आवश्यक है कि कार्य करते रहें, देशों को एक साथ मिलाते रहें और एक सुन्दर संसार का निर्माण करें। और ये तब ही हो सकता है जब हम अपने अन्तर में झाँके और जब हमारा अन्तर जागरूक होकर उठेगा तब ही हम ऊँचाई तक पहुँच सकते है । और मैंने ऐसे सहज योगी देखे हैं जो मानवीय उत्तमता की चरम सीमा पर है। ऐसा क्यों है कि उन्होने यह राह चुनी है ? ऐसा क्यों है कि उन्होंने झूठ को त्याग दिया है और ड्रग्स छोड़ दी हैं। बहुतों ने शराब क्यो छोड़ दी है ? वो क्यों सच बोलते हैं और क्यों दोस्ती, दयालुता का साथ देते हैं और सबसे मिल बाँट कर रहते हैं ?

ये सब इसलिए कि अब उन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त है। अब उनकी आन्तरिक शक्तियाँ उभर आई हैं और उनकी अच्छाई उनकी दैनिक शक्ति बन चुकी है। इसी चीज को बढ़ावा देना है। और यह ही उन्नति की चाबी है। एक व्यावहारिक आदमी वो है जो संसार को जैसा है वैसा ही मान लेता है। क्या वो इस बात को मानेगा ? क्या हम सपना नहीं देख रहें । क्या ये हमारी केवल कल्पना नहीं ? ये संसार कैसे बदलेगा ? ये तो वर्षो से ऐसा है। अगर आप सोचें तो मैं एक सुलझा हुआ आदमी हूँ। मैं भावनाओं को हावी नहीं होने देता। मैं एक कुशल कार्यकर्ता और एक नीतिवान इन्सान हूँ। मुझे दिमाग से काम लेना है और दिमाग एक सीमित हथियार है। अगर आप दिमाग लगाएँ, तो एक ओर है विनाश - न्यूक्लीयर और ऐसे हथियार जो विश्व का सर्वनाश कर देंगे चार गुना। क्या हम ऐसी दुनिया चाहते हैं ? और क्या हम ऐसी दुनिया में जी सकते हैं ? आज नहीं तो कल ऐसा अवश्य एक दिन आएगा, जब किसी एक कीगलती से विश्व पर सर्वनाश का बादल छा जाएगा। तब कौन जीवित रहेगा ? मानव कदापि नहीं जीवित रह सकता।

ये सब बातें हमसे दूर नहीं है। आज की बातें हैं। एक उदाहरण और लीजिए-वातावरण। आजकल हम हर देश का एक दिवस मनाते हैं और हमने सीमाएँ बाँध ली हैं। पर वातावरण की कोई सीमा नहीं। अगर एक देश में विनाश के बादल छाएँ तो दूसरे देशों पर भी उनका असर पड़ता है, ये आप जानते हैं। शरनोबिल सर्वनाश, जहरीले पदार्थों का फेंकना, ओज़ोन की तहों का सर्वनाश एवम् "ग्रीन हाऊस इफैक्ट"। ये सब विश्व की समस्याएँ हैं। एक स्थान पर आरम्भ होकर कितने और स्थानों पर इसका असर होता है। तो जब हम एक शान्तिपूर्ण देश के विषय में बात करते हैंतो वो एक सपना नहीं है। वो आजकल हमारे पास है - केवल हमें उसे पहचानना है, समझना है और उसका हल निकालना है। अब हमारे पास समय कम है। दस साल पहले वातावरण की इतनी समस्या नहीं थी। तब वातावरण केवल एक आंतरिक शब्द था - पर आज ये

बात नहीं है। अगर हम अपना रहन सहन बदलेंगे नहीं, अपने आगे आने वाले रिश्तों पर विचार नहीं करेंगे और ये नहीं सोचेंगे कि आपस में देश किस प्रकार एक दूसरे की मदद कर सकते हैं, तो हम मुसीबत में फंस जाएँगे।

ऐसे समय में सहज योग की महत्ता है। सहज योग केवल आत्मिक है और हर वो आदमी जो अपनी उन्नति करना चाहता है सहज योग अपना सकता है। ये ही उन्नति की चाबी है। सहज योग भारतीय है और भारत की एक अपनी ही संस्कृति है। भारत में ऐसे लोग हैंजिनकी जड़ें हजारों साल पहले की हैं और भारत की संस्कृति में महात्माओं का ध्यान लगाने का और आध्यात्म का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान रहा है। दो हजार साल पहले लोग अपने से ये मूल सवाल कर रहे थे। हम यहाँ क्यों हैं ? ईश्वर कौन है और हमारा रिश्ता क्या है ? ये सवाल एक विकसित दिमाग के हैं, पिछड़े हुए दिमाग के नहीं। और दो हजार साल पहले ऐसे दिमाग थे जो पूर्णतः विकसित थे और इतिहास गवाह है। ये ही संस्कृति है। भारत की संस्कृति रही है आध्यात्म, ध्यान लगाना, मानवता के लिये सही पथ, धर्म और धर्म के साथ रहना। सब यहाँ नहीं पहुँच सकते पर ये ही मूल दर्शन रहा है। चीन में मैं कहूँगा अत्यन्त बौद्धिकता है। एक महान संस्कृति, और पूरबीय देश आज विश्व को बहुत कुछ दे सकते हैं। पर हुआ क्या है कि पश्चिमी देश खूब विकास कर गए हैं क्यों कि वहाँ तकनिकी क्रान्ति सीमा पार कर गई है। उन्होंने चमत्कार दिखाए हैं पर मानव को पीछे छोड़ आए हैं। और इस प्रकार से उनके जीवन में एक असमानता आ गई हैं। उनके अन्दर शान्ति नहीं है। उनके पास सब कुछ है पर क्या वे खुश हैं ? क्या उनके पास शान्ति है ? क्यों नहीं है ? क्योंकि उन्होंने एक बड़ा फ़ासला तकनीक और मानव के बीच कर दिया है।

पूरब में अब तक तकनीक हावी नहीं हुई है। एक सन्तुलन है, मानव की सत्ता की ओर आध्यात्मिक झुकाव है। पूरब और पश्चिम की आध्यात्मिकता एक साथ आ सकती है। पश्चिम में भी आध्यात्म है पर भौतिकवाद इतना बढ़ गया है कि आध्यात्मिकता ढक चुकी है। मेरी यही आशा और प्रार्थना है कि ये दोनों जग मिल जाएँ। हमें इसी ओर कार्य करना है।

ईश्वर के प्रतिनिधि, श्री हनुमान की पूजा

पिछले हफ्ते हम सब श्री हनुमान पूजा के लिए मारगेट,इंगलैण्ड में उपस्थित थे। वहाँ के कुछ दृश्य आपके सम्मुख प्रस्तुत हैं।

इंगलैण्ड के दक्षिण -पूर्वी सिरे पर केन्ट नामक जिला है। उस जिले में समुद्र तट पर एक छोटी सी, शान्त जगह है, मारगेट। हम सब वहाँ शुक्रवार की शाम को पहुँचे। शनिचर की सुबह

श्री माताजी मारगेट पहुँचीं और स्टेशन पहुँचते ही उन्होंने उस जगह को "इंगलैण्ड का बगीचा" कह कर उसका नामकरण किया। ब्राइटन के बटलिन्स होटल में सबके सोने के लिए चार सौ बिछौनों का प्रबन्ध किया गया था। वहाँ के सहज योगियों ने अवश्य क्थन लगाए होंगे जिससे कि इतने लोग आयें कि सारे बिछौने भर जाएँ। अन्त में वहाँ लगभग छः सौ सहज योगी थे और सब बड़े आराम से रविवार की सुबह पूजा के लिये ग्रैंड होटल के बड़े कमरे में तैयार बैठे थे।

शनिवार सबेरे सब बड़े उत्साह से श्री माताजी के स्वागत के लिए स्टेशन पहुँचे। उस दिन बहुत सर्दी नहीं थी पर अक्सर जैसा मौसम इंगलैण्ड में होता है, वैसा ही था। बादल छाए हुए थे, समुद्री हवा चल रही थी और कहीं कहीं धूप भी खिली हुई थी। पूरा स्टेशन योगियों से उमड़ रहा था और सबने अपनी पूज्यनीया माँ को पुष्प भेट किए। जन-समुदाय/एक -आध पुलिस के देख कर आदमी भी वहां आ गए, पर वातावरण इतना आनंदमय था कि वे भी कह न सके। तब श्री माताजी गाड़ी में सेन्ट जॉर्ज होटल के लिए रवाना हुई और हम सब पैदल या कार में अपने अपने होटल वापिस लौट गए।

शनिचर को, रात को खाने के पश्चात, हम सब श्री माताजी के सम्मुख एक रंगारंग कार्यक्रम के लिए एकत्रित हुए। सबसे पहले इगलैण्ड के छोटे छोटे बच्चों ने श्री हनुमान की कथा को एक नाटक के रूप में प्रस्तुत किया। लड़कों ने बड़े चाव और गर्व से अपनी अपनी वानर की पोशाकें पहनी हुई थी। इसके पश्चात, सेक्सपियर के नाटक "अमिडसमर नाइट्स ड्रीम" का एक अंश प्रस्तुत किया गया। उसमें "पक" का पात्र जौन ग्लोवर ने निभाया । एक स्थान पर जब नृत्य के लिए संगीत बजाना था तो कैसेट खो गया और मिल नहीं रहा था। रिक्त स्थानों को भरने के लिए निक ग्रैन्बी ने सबका मनोरंजन किया और सब लोगों को खूब हँसाया। उन्हें अपने रात का भोजन अत्यन्त याद आ रहा था। और उसी को लेकर उन्होने सबको प्रसन्न किया। उसके बाद एकदम संगीत आरम्भ हो गया। श्रीवास्तव ने निक ग्रैन्बी को उनके अभिनय के लिए मुबारकबाद दी। प्रताप और प्रिअस पवार द्वारा किया गया कत्थक नृत्य अत्यन्त ही प्रभावशाली था। नृत्य के पश्चात, संगीत था, इंगलैण्ड के सहज योगियों ने भजन गाए और रे हेरिस की बहन शैरोन ने एक गीत सुनाया, श्री माताजी को नृत्य बहुत अधिक पसन्द आया।

रविवार पूजा का दिन था। श्री माताजी ने देवदूतों के विषय पर बात की । श्री हनुमान एक देवदूत हैं और श्री माताजी ने बताया की उन्होने हमको भी देवदूत बना दिया है। श्री माताजी हमें सन्त नहीं बना सकती थीं क्योंकि सन्त अपने स्वयं के प्रयासों से सन्त बनता है, परन्तु देवदूत को अपनी ओर से तनिक भी प्रयास नहीं करना पड़ता। उसे तो उसकी आदरणीय माँ निर्मित करती हैं। लेकिन श्री हनुमान और हमारे मध्य एक मौलिक असमानता है। श्री हनुमान को ये ज्ञान

...7

है कि वे एक देवदूत है और उनमें क्या शक्तियाँ विद्यमान है। जब कि हमें या तो इस बात का ज्ञान नही है, या हम इस बात को भूल जाते हैं। आवश्यक बात ये है कि देवदूतों को सुरक्षा प्रदान है। सहज योगियों को प्रतारणों से पूर्ण सुरक्षा प्राप्त है। श्री माताजी ने कहा कि सन्तों को प्रतारणाएँ मिल सकती हैं, अवतारों को मुसीबतें घेर सकती हैं, परन्तु सहज योगियों को पूर्ण सुरक्षा प्रदान है। श्री माताजी ने श्री हनुमान के विषय में और भी बहुत कुछ बताया और कहा कि जब श्री हनुमान ने सूर्य को निगला था तो ये इस बात का प्रतीक था कि उनका अपने अहम् पर और अपनी दाँई ओर पर पूर्ण नियंत्रण था।

पूजा तीन चार घन्टों तक चली। पूजा के उपरान्त सारे देशों से एकत्रित सहज योगियों ने श्री माताजी को अनेक उपहार भेंट किए। इन उपहारों में एक श्री हनुमान की तस्वीर थी जो कि फ्रेन्च बच्चों ने अपनी गर्मियों की छुट्टियों में बनाई थी। एक विशेष उपहार स्विटज़रलैण्ड से था एक एननीसिएशनकी मूर्ति का। पूजा के दौरान भजन गाए गए और इंग्लैण्ड के सहज योगियों ने श्री तुलसीदास जी की हनुमान चालिसा का पाठ गाकर सुनाया, जो श्री माताजी को विशेषकर पसन्द आया।

ये सब आनन्द रविवार की शाम को सुबह तट पर एक हवन के साथ समाप्त हुआ। हम लोग अन्धेरे में और हल्की फुहार में खड़े, श्री माताजी के 108 नामों का उच्चारण कर रहे थे। उस समय श्री माताजी अपने कक्ष में विश्राम कर रही थी। परन्तु उनका ध्यान हम सब पर ही लगा था। हवन करने का विचार एकाएक किया गया था और समुद्र तट पर एक रिक्त कैन्डलस्टैन्ड से स्थान में हवन की तैयारी की गई। कुछ लोग बैठे थे और कुछ चारों ओर खड़े हो गए। हवन के पश्चात एक साथ सबने "कुन्डलिनी कुन्डलिनी" अथवा और अनेक गीत गाए और फिर हम सब होटल लौअ गए। अन्त का दृश्य मुझे याद है जब जोजी, हवन के पश्चात, स्नेक बार में बैठा सारे आनन्द का विवरण कर रहा था और सब प्रसन्नता से पूर्ण थे। परन्तु मैं अधिक विवरण नही दे पाऊगाँ।

आप सब को ये तो अवश्य याद होगा कि अगले शनिचर- इतवार को सोरैन्टो में, नेपोली के समुद्री तट पर, सहसरार पूजा की जाएगी। ऐसा कहा गया है कि एक पानी के जहाज के द्वारा हम सब को कैपरी के द्वीप पर ले जाया जाएगा। सहसरार पूजा के पश्चात अगले शनिचर-इतवार को, जो कि 2। मई को आता है, बारसलोना में बुद पूजा होगी। उसके बाद ।। जून को एक पूजा न्यू यार्क में होगी। ततपश्चात ।4 जुलाई को बैसटील की दो सौवीं शताब्दी पर फ्रान्स में देवी पूजा होगी। स्विटजरलैण्ड में गणेश पूजा,आसट्रिया में गुरु पूजा एवम् इंग्लैण्ड में श्री कृष्ण पूजा भी की जाएगी। श्री माताजी का विचार हेलसिन्की,लेनिनग्राड और ऐथन्ज जाने का भी है।

...8

पुणे में श्री माताजी का भाषण - भारत भ्रमण 1988.

श्री माताजी ने सहज योगियों के धर्म के विषय में विस्तार से बातचीत की और यह भी समझाया कि एक सहज योगी को किन नियमों का पालन करना चाहिये। उन्होने बड़े सुन्दर उदाहरण देकर समझाया कि धर्म और सत्य में कितनी शक्ति है।

आप सबका पुणे में स्वागत है। शास्त्रों में पुणे को "पुण्य पट्टणा" कहा गया है और इसका अर्थ है "पुण्यों का शहर।" यहाँ हम अपने पुण्यों के लिए अथवा पुण्य कमाने के लिए पूजा कर रहे हैं। अब सवाल यह है कि पुण्य क्या है ? पुण्य किस प्रकार मिलते है ? हमें इस सबकी जानकारी अवश्य होनी चाहिए।

हमारे अन्दर कुछ धर्म है और हमें पुण्य कमाने के लिए इन धर्मो का पालन करना ही पड़ेगा । सहज योगी का पहला धर्म है कि उसमें भोलापन हो और यह पावन हो .....

दूसरा धर्म यह है कि हमें प्रकृति की सुन्दरता को समझाना चाहिये और उसके साथ रहना चाहिए अथवा हर भद्दी चीज को अपने से दूर रखना चाहिए। असुन्दर लोग ही कुरूप चीजों का साथ देते हैं। और जिनके अन्दर हिंसा/जनक दिखना चाहते हैं और जंगली रहना पसन्द करते हैं।

नाभी का धर्म समझना अत्यन्त आवश्यक है। नाभी का पहला धर्म है कि हमें एक अच्छा गृहस्थ होना पड़ेगा। धर्म के अपने नियम और तौर तरीके होते हैं। उदाहरण के तौर पर एक आदमी को एक आदमी की तरह आचरण करना चाहिये न कि राक्षस की तरह । पर हाँ, उसे अपन पत्नी से दबना भी नहीं चाहिए। हर धर्म की अपनी मर्यादा होती है और धर्म का पालन करना आवश्यक है। धर्म का आदर करने से ही धर्म का पालन किया जा सकता है।

एक धर्म होता है राज धर्म। इस धर्म में हमें कानून का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

मन के धर्म का पालन तब होता है जब हमारे दिल में दूसरे के प्रति कोमल भाव हों और हम दयावान हों।

तत्पश्चात आता है सामूहिक धर्म .....

सहसरार पर होता है "इसलाम"- जिसका अर्थ है समर्पण। क्या समर्पण करना ? समर्पण अपने अहम का और अपनी बुरी भावनाओं का। इस बात का ज्ञान और समझ/ कर हमें सहज योग के लिये कार्य करना है, दूसरों का हित करना है और हित करने में ही आनन्द प्राप्त करना है- ये ही सबसे बड़ा पुण्य है।

-सदा आशिर्वाद।

श्री सी॰ पी॰ श्रीवास्तव का भाषण, गणपतीपुले, 1988

ऐसे अवसर पर बोलना कोई सरल कार्य नही है। राजेश ने मेरे विषय में इतना कुछ कह डाला है और मेरी इतनी प्रशंसा की है कि मैं समझ नही पा रहा कि मैं इस प्रशंसा का अधिकारी हूँ भी या नही। और अगर मैं ये मान लूँ कि ये सब सत्य है तो मैं बड़ा ही खुशनसीब आदमी हूँ और ऐसा मनुष्य हूँ जिस पर परम पूज्य की असीम कृपा दृष्टि है और वो और कोई नही आपकी .....{तालियाँ} ।

हमारी शादी को बयालीस साल हो चुके हैं और जो कुछ भीराजेश ने बताया वो सब इन्ही बयालिस सालों में हुआ-- मेरे जीवन के स्वर्णिम बयालिस साल । मेरे प्यारे मित्रों, प्यारे सहज योगियों और प्यारी सहज योगिनियों आप पूरे विश्व से यहाँ एकत्रित हुए हैं। मैं आप लोगों से आपके देशों में मिला था और आज मुझे अपने ही देश में आप से मिलकर बड़ी खुशी हो रही है। मैं सबसे पहले आप सबका भारत में स्वागत करता हूँ और आप सबको यहाँ देखकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ। मुझे याद है कि आप में से बहुतों से मैं इस साल के आरम्भ में फ्रान्स, स्पेन, इटली और स्विटजरलेन्ड में मिला था और वह मुलाकात मैं कभी भूल नही सकता।

मैं भारत में पला बढ़ा और मुझे भारतवासी होने का बड़ा गर्व भी है। पर उसके साथ साथ मुझे ये भी गर्व है कि मैं इस विश्व का वासी भी हूँ। आपकी माँ की तरह, मैं भी ये मानता हूँ कि ये पूर्ण जग एक परिवार है और हम सब भाई बहन हैं। हम सब को प्रेम और शान्ति सहित इस संसार में रहना चाहिये। आप सब एक अत्यन्त ही सुन्दर दुनियाँ में रहते हैं, परन्तु मैं एक दूसरे ही प्रकार की दुनिया में कार्य करता हूँ जो आप की दुनिया सी सुन्दर नही है। आपकी दुनिया अलग है। एक बार मुझे कुछ सहज योगियों से बातज करने का अवसर प्राप्त हुआ था। कोई चार साल पहले की बात है। तब मैंने उनसे कहा था कि दो एकदम अलग जगत हैं। एक आपका जग है-- जहाँ प्रेम वास करता है, पवित्रता है, मिल बाँट कर रहना है और जहाँ मनुष्य प्रवृत्ति अपनी सीमा पर है। दूसरा जग इस जग से बहुत दूर है। वो यह जग है जहाँ मैं रहता हूँ और जहाँ मुझे कार्य करना पड़ता है। और मेरा जग वो नही है जो आप यहाँ देखते है। उस जग में लोग केवल अपने बारे में सोचते हैं, अपने लिए कार्य करते हैं, एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड में रहते है और दूसरों को दबाते हैं।

युनाइटेड नेशन्स, जिसके लिये मैं कार्य करता हूँ, इसलिये स्थापित की गई थी कि एक नया संसार बन सके, एक नयी राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था आ सके-- एक न्यायपूर्ण व्यवस्था और इस युनाइटेड नेशन्स के परिवार में काफी कुछ कार्य हो रहा है। बहुत प्रयत्न किए गए हैं, शान्ति, स्वास्थ्य, शिक्षा, विज्ञान और तकनीक को बढावा देने के। पर मेरे प्यारे साथियों, एक बात पर कभी ध्यान नही दिया गया--वो है मनुष्य । और आप सब जानते हैं कि मनुष्य इस

संसार में सबसे उत्तम है। और यहीं पर हार हुई है। विज्ञान की बढोत्तरी हुई है, टेक्नोलोजी आगे बढ़ी है, नए प्रकार के हथियार बने हैं। अणु विज्ञान खूब विकसित हुआ है और बहुत कुछ हुआ है परन्तु - परन्तु मनुष्यता पीछे, बहुत पीछे रह गई है। इन्सानियत पर ध्यान ही नहीं दिया गया। और आप मानेंग की सबसे कठिन कार्य है मनुष्यता का विकास। इन तीन अरब लोगों में से हर शक्ति का अलग एक व्यक्तित्व है। इसलिये हर प्राणी से व्यवहार रखना कोई सरल कार्य नहीं हैं। और कोई शक्ति ऐसी ही उठनी चाहिये जो इस मतलबीपन के जोर को समाप्त कर दे। और वो जोर तब उत्पन्न हुआ जब आपकी माँ ने सहज योग का विकास किया।

आप में से बहुत लोग जानते हैं या नहीं भी जानते कि हमारी दो बेटियाँ हैं एक यहीं बैठी है। जब हमारी ये दो बेटियाँ हुई तो हमने अपने बीच एक निश्चय किया की जब तक हमारी ये बेटियाँ बड़ी नहीं हो जाती और इनका विवाह नहीं हो जाता आप उनकी देखभाल करेंगी। आपकी माँ मान गई और उन्होंने हमारी बेटियों को बड़ा किया और उनके विवाह किए। जब ये सब हो गया तब हमने सोचा कि अब आपकी माँ को जग के सामने आ जाना चाहिये। और तब ही सहज योग का बीज फूटा।

आज जो मैं यहाँ देख रहर हूँ वो एक चमत्कार है। मुझे याद है वो थोड़े से लोग जो सबसे पहले इनके पास आते थे और आज भी यहाँ हैं। तब ये विचार था और एक कल्पना थी। तब से अब तक सहज योग बढ़ा है और एसका विकास हुआ है और उसी का फल है ये मुस्कुराते हुए चेहरों का समुह। मैं आपको बता नहीं सकता कि आज आपके मध्य मुझे कितना गौरव प्राप्त हो रहा है। मैं ये बात दिल से कह रहा हूँ। और आपके बीच होना मेरे लिये एक ओत्साहिक और सौभाग्य की बात है।

मैं ये नहीं कह सकता कि मैं आपके स्तर पर हूँ। आप मुझसे कहीं उच्च स्तर पर हैं। आपकी माँ की कृपा से आप लोगों ने मनुष्य की कुरुपता और जाहिलता पर विजय प्राप्त कर ली है। उनको इसके लिये धन्यवाद है।

मैं कभी कभी अपनी दोस्तों को कहता हूँ कि अगर मैं इस संसार में एक आदमी को भी बदल सकता है और उसका कायाकल्प कर सकता है और उसे भलाई और अच्छाई के पथ पर डाल सकता तो मैं समझता की मेने बहुत कुछ पा लिया है। और जिसने हजारों लाखों को बदल डाला वा तो एक करिश्मा है। मैं सच कहता हूँ,आप में से एक एक मेरे लिये एक करिश्मे से कम नहीं।

राजेश ने मुझसे कहा है कि मैं आप सब को एक सन्देश दूँ। एक सन्देश है मेरे पास।

...11

"आज का विश्व एक अद्भुत विकास से गुजर रहा है। आज वे चीजें हो रही है जिनके बारे में तीन साल पहले सोचा भी नहीं जा सकता था। जब चार साल पहले मैंने एक सहज योगियों के समूह से बात की थी तो मैं जरा चिन्तित था। मैं ये नहीं समझ पा रहा था कि जिस खुदगर्ज जग में मैं रहता और काम करता हूँ वो आपके स्तर ते पहुँच पाएगा भी या नहीं। मैंने उस समय का प्रकाश नहीं देखा था। हाँ, मेरी प्रार्थना ये अवश्य रही है कि इस जग को कुछ होना चाहिये। और हुआ क्या है कि पिछले तीन वर्षो में आपकी मां दो बार यू॰एन॰ हो आई है। और ग्रेगोर को धन्यवाद देना चाहिये जिसने इस मुलाकात का प्रबन्ध किया।

और आप मानिए कि यू॰ एन॰ का कायाकल्प होना आरम्भ हो गया है। चार वर्ष पहले मैं दुखी, चिन्तित और निराश था। आज मैं आशासे पूर्ण हूँ। बल्कि आज मुझे अपने यू॰एन॰ पर गर्व है। हर ओर जैसे शान्ति फूटी पड़ रही है।

अफगानिस्तान में सैनिक लौट रहे हैं। नामीबिया स्वतंत्र हो जायेगा। इरान और इराक जिनका युद्ध रुकने का नाम नहीं ले रहा था, अरबों रुपये खर्च हो गया था और हजारों लोग मर रहे थे। आज उनके बीच शान्ति है। कोई युद्ध नहीं है। आप संसार में चारो ओर नजर डालिए। भारत और चीन उच्च स्तर पर मिलकर आज दोस्त हो गए हैं। पाकिस्तान में नया शासन स्थापित हो गया है और लोक तंत्र आ गया है। मेरे मित्रों समस्त संसार में परिवर्तन हो रहा है।

ये समय बड़ा ही ऐतिहासिक समय है और आप सब इस मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। आप ये कदापि नहीं मानियेगा कि सहज योग केवल यहाँ उपस्थित लोगों तक सीमित है। आज का समय वो है जब आपकी और इनकी चैतन्य लहरियाँ फैल रही हैं और आप इस ऐतिहासिक समय के पात्र हैं जो सहज योग का सन्देश फैला रहे हैं।

प्यारे मित्रों, अब मै औरक्या कह सकता हूँ। हम बड़े ही खुशनसीब हैं कि हम सब ऐसे समय में रह रहे हैं। आपको मालूम होगा कि प्लेटो एक बडा दार्शनिक था। उसका कहना था कि सम्पूर्ण सत्ता एक दार्शनिक राजा के हाथों में होनी चाहिये। रुसी उनके बहुत बाद में आया। उसका कहना है था कि दार्शनिक राजा को सत्ता दे देनी चाहिए पर ये डर नहीं रहना चाहिये कि सत्ता को दुरुपयोग हो। और आपके पास तो वो है जिनके हाथों में दैविक शक्ति भी केवल आशीर्वादसें के लिये है।

मैं आप सब को आपके प्रेम, प्यार, दया और सद्भावना के लिये बहुत बहुत धन्यवाद देता हूँ और इस बात का भी आभारी हूँ कि आपने साथ रहने का मुझे अवसर दिया । आप लोगों ने जो कुछ कहा और किया मैं उस सब के योग्य तो नहीं हूँ, पर येसब आपका प्रेम है और उसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। मै आपका यह बताना चाहूंगा कि मैंने यह निर्णय लिया है कि जब मेरा चौथा कार्यकाल, जिसमें कि अब मैं कार्यरत हूँ, समाप्त हो जायेगा, तब मैं और आगे कार्य

नहीं करूँगा। यह कार्यकाल 31 दिसम्बर 1989 को समाप्त होता है और मैंने यह बात अपनी आर्गनाइजेशन को बता दी है। तब मैं यू॰ एन॰ के कार्य से मुक्त हो जाऊँगा और उसके पश्चात क्या होगा इसका ज्ञान नहीं। जो कार्य मेरे पथ पर आएँगे मैं उसके लिए तैयार रहूँगा।

धन्यवाद।

वैवाहिक शपथें, गणपतीपुले, 1988-89॰

पवित्र अग्नि के चारों ओर फेरे

वर वधु से कहता है:

पहला फेरा:

मैं श्री आदि शक्ति का हृदय में स्मरण करता हूँ और तुमसे कहता हूँ कि अच्छे मूलाधार के लिए तुम्हें अपनी पवित्रता रखनी होगी, हमारी भलाई और हमारा मंगल इसी में है कि हम पूर्ण आदर और भोलेपन से रहें और चालाकी त्याग दें।

दूसरा फेरा:

मैं श्री आदि शक्ति का हृदय में स्मरण करता हूँ और कहता हूँ कि परमात्मा की सुन्दरता और कला हमारे निजी जीवन का भाग हो और हमारा घर सजा धजा रहे। जैसे सितारे और ग्रह अपने अपने पथ पर चलते है उसी प्रकार हम भी केवल धर्म के अनुसार जीवन व्यतीत करें और कार्य करें। मैं सारे सहज योगियों का स्वागत करूंगा और पूरी तरह तुम्हारी सहायता करूँगा कि हम धर्म के प्रति अपना फर्ज निभा सकें।

तीसरा फेरा:

मैं श्री आदि शक्ति का हृदय में स्मरण करता हूँ और कहता हूँ कि जो भी कमाऊँगा वो धन सब तुमको दे दूँगा। क्योंकि यह मुझे ज्ञात है कि जो भी मेरे पास आता है वो तुम्हारे ही पुण्य का उपहार है। तुम धन सोच समझकर और मेरी ही सलाह से खर्च करोगी। हमें यह ध्यान में रखकर चाहिये कि सब धन ईश्वर का है और इसलिए भगवान का आशीर्वाद समझ कर ही यह धन खर्च करना चाहिये। हमें सांसारिक वस्तुओं के पीछे नहीं भागना है। हमें पूर्णतः अलग होकर अपने महालक्ष्मी तत्व को बढ़ाना है।

चौथा फेरा:

मैं श्री आदि शक्ति का अपने हृदय में स्मरण करता हूँ कि और कहता हूँ कि तुम्हारी भावनाओं को कभी ठेस नहीं पहुँचाऊँगा और पूर्व जन्मों में की गई अपनी और तुम्हारी गलतियों को भुला दूँगा। मेरा प्यार तुम्हारे लिए और तुम्हारा प्रेम मेरे लिए असीमित होना चाहिये। कभी अपनी भावनाओं को दबाना नहीं और उन्हें मुझसे कभी छुपा कर नहीं रखना। कभी मुझे बताने में हिचकिचाना नहीं अगर तुम परेशान हो या किसी ने तुम्हें परेशान किया हो। मैंने सदा तुम्हारा साथ दूँगा, तुम्हारी रक्षा करूंगा और तुम्हारे बारे में कोई असत्य बात नहीं मानूँगा।

वधु वर से कहती है ---

पाँचवा फेरा:

मैं श्री आदि शक्ति का हृदय में स्मरण करती हूँ और कहता हूँ कि देवी मिठास तुम्हारे जीवन में भर दूँगी और जो तुम्हें आनन्द दे मैं वैसा ही भोजन तुम्हारे लिये बनाऊँगी। हमें केवल सहज योगियों के हाथ बना भोजन चाहिये। कृपया मुझ पर यह जोर नहीं डालियेगा कि मैं उनसे मिलूँ जो अच्छे सहज योगी नहीं हैं।

हम आपस में कभी ऐ दूसरे पर चिल्लायेंगे नहीं और कभी भी बुरी भाषा का प्रयोग नहीं करेंगे। तुम मेरी सुनना और मैं तुम्हारी सुनूँगी।

छठा फेरा:

मैं श्री आदि शक्ति का हृदय में स्मरण करती हूँ और कहती हूँ कि हम नियम से रोज ध्यान लगायेंगे और अपने बच्चों को और मित्रों को भी ध्यान लगाना सिखायेंगे। हमारा जीवन एक प्रायश्चित होना चाहिये और बेकार में हमें इसकी दूसरों से शिकायत नहीं करनी चाहिये एवम् हर हाल में प्रसन्न रहनर चाहिये। तुम्हारी आँखे शुद्ध होना चाहिये और दूसरी नारियों का विचार नहीं आना चाहिये और लालच भी नहीं होनी चाहिए।

सातवाँ फेरा:

मैं श्री आदि शक्ति को हृदय में स्मरण करती हूँ कि परम पूज्य श्री माता जी निर्मला देवी के हम पर असीम आशीर्वाद है और हमें अपने दिल उन्हें पूर्णतः समर्पित कर देने चाहिये। समर्पण तन, मन और बुद्धि को होना चाहिये। हमें यह याद रखना चाहिये कि आत्म साक्षात्कार का कार्य कितना महान और महत्वपूर्ण है एवम् और सब कुछ हमारे जीवन में जरूरी है और कोई मतलब

नही रखता। मेरी यह शर्त है कि दिन रात हम उनसे बहती चैतन्य लहरियों का आनन्द लें और अपना सब कुछ उन्हें सौंपकर उनकी फोटो की पूजा मर्यादा पूर्वक करें। हमें उनके सम्मुख अत्यन्त विनम्र रहना चाहिये। अगर मैं ये सब ना कर पाऊँ तो तुम मुझे याद दिला देना।

वर वधु साथ साथ कहते हैं -

मुझे परम् पूज्य श्री माताजी के आशीर्वाद से मोक्ष का पथ प्राप्त हुआ है, सो वो पथ मैं औरों को भी दिखाऊँगा और महान और आत्म साक्षात्कार प्राप्त लोगों के साथ मिल कर सारे संसार को मंगलमय करूँगा।

हवन की समाप्तिः

वर तीन बार हवन में घी डालते हुए कहे :-

ओम् अग्नेय स्वाः
ओम् अग्नेय स्वाः
ओम् अग्नेय स्वाः
ओम् तत्सत
ओम् तत्सत
ओम् तत्सत
ओम् पूर्णमदः पूर्णमिदम।

xxxxxxxxxxxxxxxxxx